

डॉ नगेंद्र

डॉ नगेंद्र के आलोचनात्मक महत्वपूर्ण बिंदु :

1. हिंदी आलोचना के शुक्लोत्तर युग में सैद्धांतिक समीक्षा के क्षेत्र में डॉक्टर नगेंद्र का सर्वोत्तम स्थान है ।
2. डॉ नगेंद्र ने 'रीतिकाल' की भूमिका में 'रस', 'अलंकार', 'वक्रोक्ति', 'रीति', 'ध्वनि' आदि की विवेचना सर्वथा नवीन दृष्टिकोण से की है ।
3. डॉ नगेंद्र की आलोचना-कर्म से संस्कृत, ग्रीक और अंग्रेजी साहित्यशास्त्र की प्रायः सभी महत्वपूर्ण विचारणाएं एवं धारणाएं हिंदी साहित्यशास्त्र में प्रविष्ट हो चुकी है ।
4. डॉ नगेंद्र में 'आलोचक की आस्था' (1966) निबंध संग्रह के तीन प्रथम निबंधों में अपनी साहित्यिक मान्यताओं को स्पष्ट किया है ।
5. डॉ नगेंद्र ने 'आई ए रिचर्ड्स' के समान ही साहित्य संबंधी विचारधारा को दो रूपों में स्वीकार किया है- 'मूल्यवादी विचारधारा' और 'कलावादी विचारधारा' ।
6. डॉ नगेंद्र ने काव्य के तीन तत्त्वों (भाव, कल्पना और बुद्धि) में 'भाव' को ही प्रधानता दी है ।
7. डॉ नगेंद्र ने काव्य को कल्पना और सौन्दर्य के मिश्रण से प्रसूत माना है ।
8. पश्चात आलोचकों में डॉक्टर नगेंद्र 'आई ए रिचर्ड्स' और 'क्रोचे' से विशेष रूप से प्रभावित हैं ।
9. डॉ नगेंद्र के अनुसार, "मैं फ्रायड के दर्शन को एकांगी और उसकी आधारभूत अनेक युक्तियों को दुरारूढ और अविश्वसनीय मानता हूं । काम जीवन का मुख्य अंग है, पर सर्वांग नहीं, ऐसी दशा में मैं फ्रायड के सिद्धांत को जीवनदर्शन के रूप में कैसे स्वीकार कर सकता हूं ।"
10. डॉ नगेंद्र 'रस' को शुद्ध मानवीय अनुभूति के स्तर पर प्रतिष्ठित करना चाहते हैं ।
11. डॉ नगेंद्र हिंदी आलोचना के क्षेत्र में सर्वाधिक समर्थ लेखक है ।
12. सुमित्रानंदन पंत के अनुसार- " डॉ नगेंद्र रसचेता तथा रसदृष्टा है । रस की अजस्र एवं निगूढ आनंद साधना के लिए जिन बौद्धिक तथा हार्दिक गुणों- अभीप्सा, सूक्ष्म संवेदन- क्षमता, अंतर्दृष्टि, संकल्प-शक्ति, सत्य प्रतीति तथा निश्चल निष्ठा आदि की आवश्यकता होती है, वे डॉ नगेंद्र में प्रचुर मात्रा में हैं ।